



Locesh kumar

02 Oct 1979

08:12 PM

Ranchi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121855301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 02/10/1979
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 20:12:00 घंटे
इष्ट _____: 36:18:40 घटी
स्थान _____: Ranchi
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:22:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:20:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:11:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 20:23:20 घंटे
वेलान्तर _____: 00:10:24 घंटे
साम्पातिक काल _____: 21:06:14 घंटे
सूर्योदय _____: 05:40:32 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:35:40 घंटे
दिनमान _____: 11:55:08 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 15:14:14 कन्या
लग्न के अंश _____: 04:07:26 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: कुम्भ - शनि
नक्षत्र-चरण _____: धनिष्ठा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: धृति
करण _____: बव
गण _____: राक्षस
योनि _____: सिंह
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: गू-गूजरमल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1901	आश्विन	10
पंजाबी	संवत : 2036	आश्विन	16
बंगाली	सन् : 1386	आश्विन	15
तमिल	संवत : 2036	पुरुटासी	16
केरल	कोल्लम : 1155	कन्नी	16
नेपाली	संवत : 2036	आश्विन	16
चैत्रादि	संवत : 2036	आश्विन	शुक्ल 11
कार्तिकादि	संवत : 2036	आश्विन	शुक्ल 11

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 11
तिथि समाप्ति काल _____ : 14:32:24
जन्म तिथि _____ : 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : श्रवण
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 08:30:39 घंटे
जन्म योग _____ : धनिष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : धृति
योग समाप्ति काल _____ : 21:40:06 घंटे
जन्म योग _____ : धृति
सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
करण समाप्ति काल _____ : 14:32:24 घंटे
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 29:13:24
भभोग _____ : 54:24:00
भोग्य दशा काल _____ : मंगल 3 वर्ष 3 मा 1 दि

घात चक्र

मास _____ : चैत्र
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : आर्द्रा
योग _____ : गण्ड
करण _____ : किंस्तुघ्न
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : मूषक
लग्न _____ : मिथुन
सूर्य _____ : वृष
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : मिथुन
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कर्क
शुक्र _____ : सिंह
शनि _____ : मेष
राहु _____ : कन्या

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

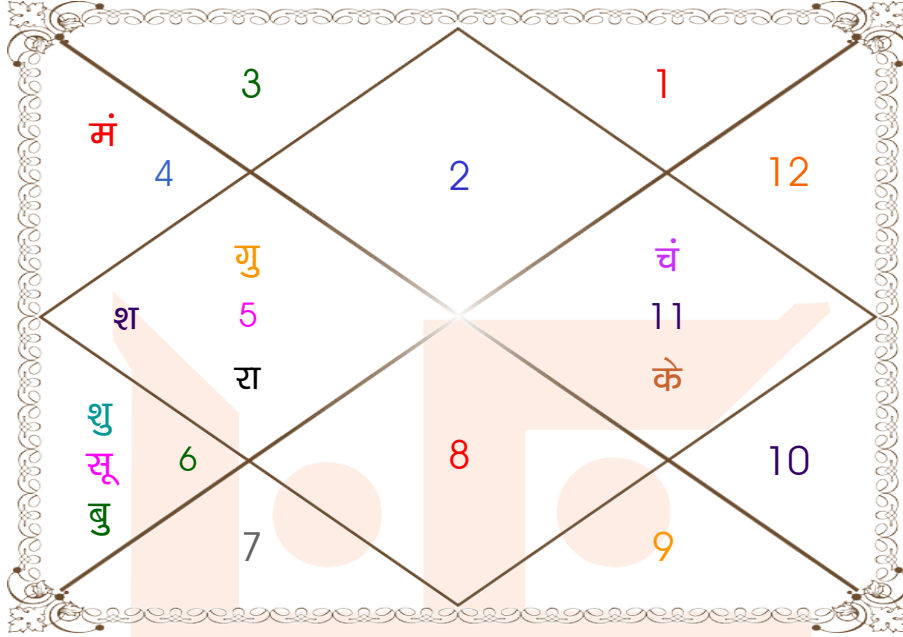
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

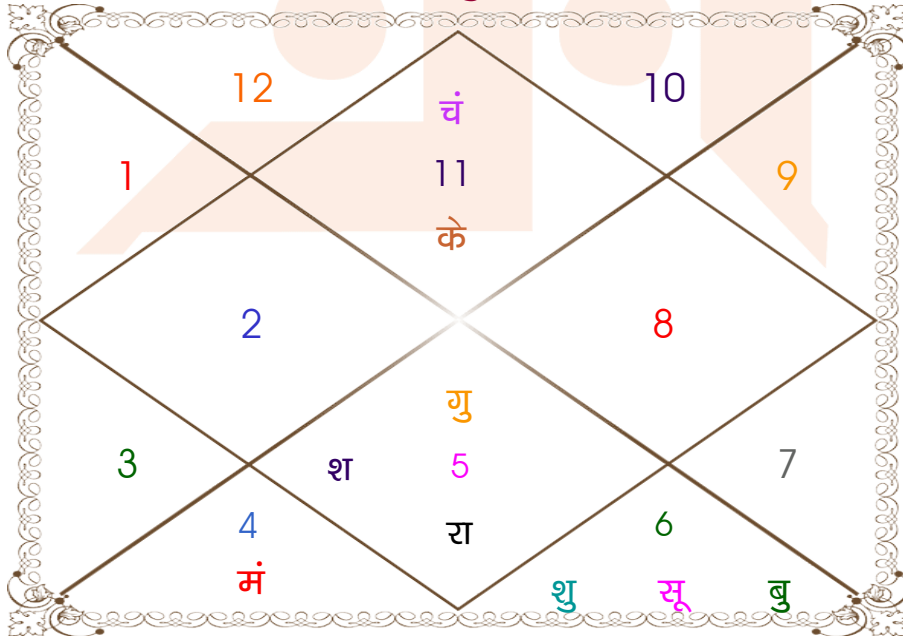
9835195382

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

		ल	
के चं			मं
			रा गु श
			शु सू बु

लग्न कुण्डली

	ल		
			के चं
मं			
श रा	गु		सू
	शु	बु	

विंशोत्तरी
मंगल 3वर्ष 3मा 1दि
मंगल

02/10/1979

03/01/2096

मंगल	03/01/1983
राहु	02/01/2001
गुरु	02/01/2017
शनि	03/01/2036
बुध	02/01/2053
केतु	03/01/2060
शुक्र	03/01/2080
सूर्य	03/01/2086
चन्द्र	03/01/2096

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 11मा 4दि
भद्रिका

07/09/2023

06/09/2028

भद्रिका	17/05/2024
उल्का	18/03/2025
सिद्धा	08/03/2026
संकटा	18/04/2027
मंगला	07/06/2027
पिंगला	17/09/2027
धान्या	16/02/2028
भ्रामरी	06/09/2028

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

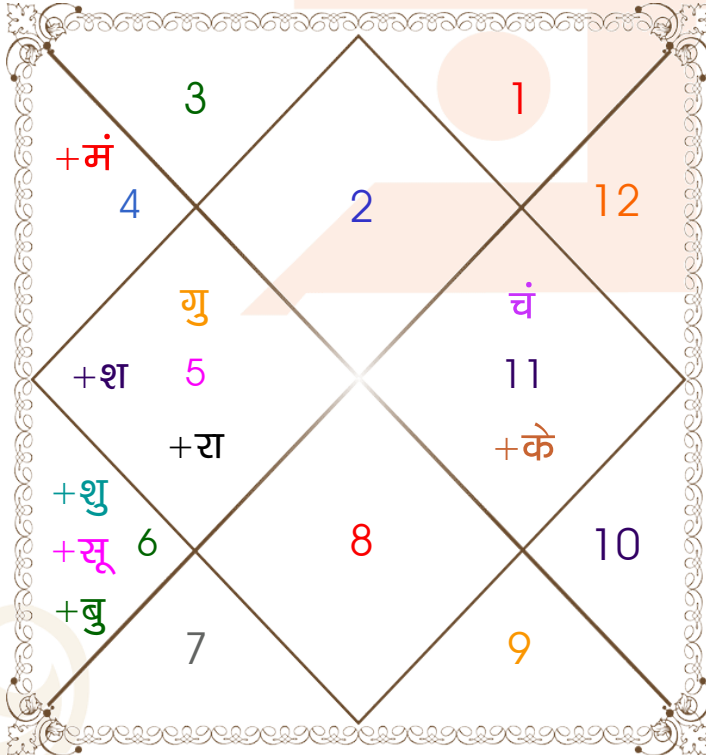
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	04:07:26	390:35:35	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
सूर्य			कन्या	15:14:14	00:59:01	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	सम राशि
चंद्र			कुंभ	00:28:06	14:43:04	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	सम राशि
मंगल			कर्क	10:59:49	00:35:04	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	सूर्य	नीच राशि
बुध	अ		कन्या	29:27:47	01:33:43	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	स्वराशि
गुरु			सिंह	07:02:50	00:11:35	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	मित्र राशि
शुक्र			कन्या	25:28:34	01:14:42	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	नीच राशि
शनि			सिंह	26:24:52	00:07:16	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	केतु	शत्रु राशि
राहु			सिंह	14:38:23	00:01:05	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
केतु			कुंभ	14:38:23	00:01:05	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	शत्रु राशि
हर्ष			तुला	25:14:06	00:03:04	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
नेप			वृश्चि	24:26:51	00:01:04	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	---
प्लूटो			कन्या	25:09:01	00:02:21	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	---
दशम भाव			मक	20:30:45	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	शुक्र	--

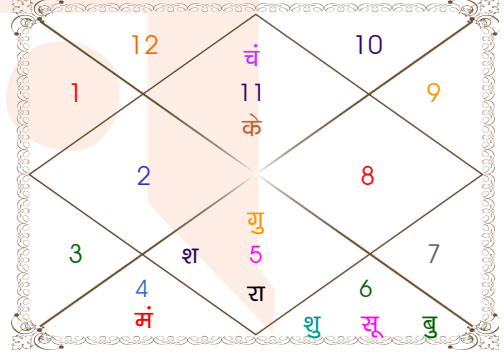
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:34:20

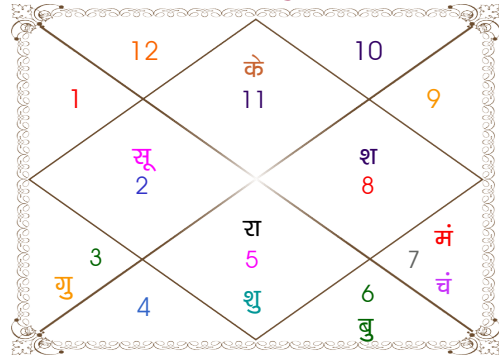
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 16:51:19	वृष 04:07:26
2	वृष 16:51:19	वृष 29:35:13
3	मिथुन 12:19:06	मिथुन 25:02:59
4	कर्क 07:46:52	कर्क 20:30:45
5	सिंह 07:46:52	सिंह 25:02:59
6	कन्या 12:19:06	कन्या 29:35:13
7	तुला 16:51:19	वृश्चिक 04:07:26
8	वृश्चिक 16:51:19	वृश्चिक 29:35:13
9	धनु 12:19:06	धनु 25:02:59
10	मकर 07:46:52	मकर 20:30:45
11	कुम्भ 07:46:52	कुम्भ 25:02:59
12	मीन 12:19:06	मीन 29:35:13

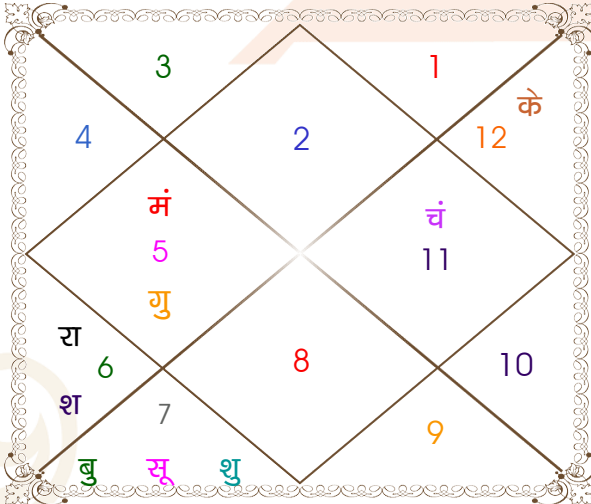
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	04:07:26
2	मिथुन	00:39:05
3	मिथुन	24:49:52
4	कर्क	20:30:45
5	सिंह	20:51:51
6	कन्या	26:51:30
7	वृश्चिक	04:07:26
8	धनु	00:39:05
9	धनु	24:49:52
10	मकर	20:30:45
11	कुम्भ	20:51:51
12	मीन	26:51:30

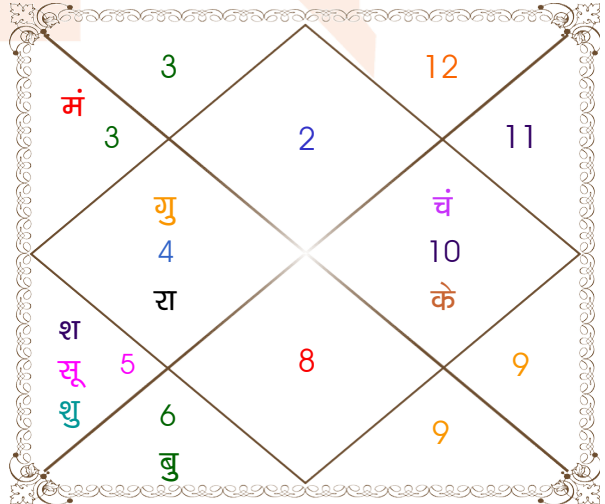
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 3 वर्ष 3 मास 1 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
02/10/1979	03/01/1983	02/01/2001	02/01/2017	03/01/2036
03/01/1983	02/01/2001	02/01/2017	03/01/2036	02/01/2053
00/00/0000	राहु 15/09/1985	गुरु 21/02/2003	शनि 06/01/2020	बुध 01/06/2038
00/00/0000	गुरु 09/02/1988	शनि 03/09/2005	बुध 15/09/2022	केतु 29/05/2039
00/00/0000	शनि 16/12/1990	बुध 10/12/2007	केतु 25/10/2023	शुक्र 29/03/2042
02/10/1979	बुध 04/07/1993	केतु 15/11/2008	शुक्र 25/12/2026	सूर्य 02/02/2043
बुध 01/07/1980	केतु 23/07/1994	शुक्र 17/07/2011	सूर्य 07/12/2027	चंद्र 04/07/2044
केतु 27/11/1980	शुक्र 22/07/1997	सूर्य 04/05/2012	चंद्र 07/07/2029	मंगल 01/07/2045
शुक्र 27/01/1982	सूर्य 16/06/1998	चंद्र 03/09/2013	मंगल 16/08/2030	राहु 18/01/2048
सूर्य 04/06/1982	चंद्र 16/12/1999	मंगल 10/08/2014	राहु 22/06/2033	गुरु 25/04/2050
चंद्र 03/01/1983	मंगल 02/01/2001	राहु 02/01/2017	गुरु 03/01/2036	शनि 02/01/2053

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
02/01/2053	03/01/2060	03/01/2080	03/01/2086	03/01/2096
03/01/2060	03/01/2080	03/01/2086	03/01/2096	00/00/0000
केतु 01/06/2053	शुक्र 05/05/2063	सूर्य 22/04/2080	चंद्र 03/11/2086	मंगल 31/05/2096
शुक्र 01/08/2054	सूर्य 04/05/2064	चंद्र 21/10/2080	मंगल 04/06/2087	राहु 19/06/2097
सूर्य 07/12/2054	चंद्र 03/01/2066	मंगल 26/02/2081	राहु 03/12/2088	गुरु 26/05/2098
चंद्र 08/07/2055	मंगल 05/03/2067	राहु 21/01/2082	गुरु 04/04/2090	शनि 05/07/2099
मंगल 04/12/2055	राहु 05/03/2070	गुरु 09/11/2082	शनि 03/11/2091	बुध 02/10/2099
राहु 21/12/2056	गुरु 03/11/2072	शनि 22/10/2083	बुध 04/04/2093	00/00/0000
गुरु 27/11/2057	शनि 03/01/2076	बुध 28/08/2084	केतु 03/11/2093	00/00/0000
शनि 06/01/2059	बुध 03/11/2078	केतु 02/01/2085	शुक्र 05/07/2095	00/00/0000
बुध 03/01/2060	केतु 03/01/2080	शुक्र 03/01/2086	सूर्य 03/01/2096	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 3 वर्ष 2 मा 26 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र 25/10/2023 25/12/2026	शनि - सूर्य 25/12/2026 07/12/2027	शनि - चंद्र 07/12/2027 07/07/2029	शनि - मंगल 07/07/2029 16/08/2030	शनि - राहु 16/08/2030 22/06/2033
शुक्र 05/05/2024 सूर्य 02/07/2024 चंद्र 06/10/2024 मंगल 13/12/2024 राहु 04/06/2025 गुरु 05/11/2025 शनि 07/05/2026 बुध 18/10/2026 केतु 25/12/2026	सूर्य 11/01/2027 चंद्र 09/02/2027 मंगल 01/03/2027 राहु 22/04/2027 गुरु 08/06/2027 शनि 02/08/2027 बुध 20/09/2027 केतु 10/10/2027 शुक्र 07/12/2027	चंद्र 24/01/2028 मंगल 27/02/2028 राहु 23/05/2028 गुरु 09/08/2028 शनि 08/11/2028 बुध 29/01/2029 केतु 04/03/2029 शुक्र 08/06/2029 सूर्य 07/07/2029	मंगल 31/07/2029 राहु 29/09/2029 गुरु 22/11/2029 शनि 25/01/2030 बुध 24/03/2030 केतु 16/04/2030 शुक्र 23/06/2030 सूर्य 13/07/2030 चंद्र 16/08/2030	राहु 19/01/2031 गुरु 07/06/2031 शनि 19/11/2031 बुध 14/04/2032 केतु 14/06/2032 शुक्र 04/12/2032 सूर्य 25/01/2033 चंद्र 22/04/2033 मंगल 22/06/2033
शनि - गुरु 22/06/2033 03/01/2036	बुध - बुध 03/01/2036 01/06/2038	बुध - केतु 01/06/2038 29/05/2039	बुध - शुक्र 29/05/2039 29/03/2042	बुध - सूर्य 29/03/2042 02/02/2043
गुरु 23/10/2033 शनि 19/03/2034 बुध 28/07/2034 केतु 20/09/2034 शुक्र 21/02/2035 सूर्य 08/04/2035 चंद्र 24/06/2035 मंगल 17/08/2035 राहु 03/01/2036	बुध 07/05/2036 केतु 27/06/2036 शुक्र 21/11/2036 सूर्य 04/01/2037 चंद्र 18/03/2037 मंगल 08/05/2037 राहु 17/09/2037 गुरु 13/01/2038 शनि 01/06/2038	केतु 22/06/2038 शुक्र 21/08/2038 सूर्य 08/09/2038 चंद्र 09/10/2038 मंगल 30/10/2038 राहु 23/12/2038 गुरु 09/02/2039 शनि 08/04/2039 बुध 29/05/2039	शुक्र 17/11/2039 सूर्य 08/01/2040 चंद्र 03/04/2040 मंगल 03/06/2040 राहु 05/11/2040 गुरु 23/03/2041 शनि 03/09/2041 बुध 28/01/2042 केतु 29/03/2042	सूर्य 13/04/2042 चंद्र 09/05/2042 मंगल 27/05/2042 राहु 13/07/2042 गुरु 23/08/2042 शनि 12/10/2042 बुध 24/11/2042 केतु 13/12/2042 शुक्र 02/02/2043
बुध - चंद्र 02/02/2043 04/07/2044	बुध - मंगल 04/07/2044 01/07/2045	बुध - राहु 01/07/2045 18/01/2048	बुध - गुरु 18/01/2048 25/04/2050	बुध - शनि 25/04/2050 02/01/2053
चंद्र 17/03/2043 मंगल 17/04/2043 राहु 03/07/2043 गुरु 10/09/2043 शनि 01/12/2043 बुध 12/02/2044 केतु 14/03/2044 शुक्र 08/06/2044 सूर्य 04/07/2044	मंगल 25/07/2044 राहु 17/09/2044 गुरु 05/11/2044 शनि 01/01/2045 बुध 21/02/2045 केतु 14/03/2045 शुक्र 14/05/2045 सूर्य 01/06/2045 चंद्र 01/07/2045	राहु 18/11/2045 गुरु 22/03/2046 शनि 16/08/2046 बुध 26/12/2046 केतु 19/02/2047 शुक्र 24/07/2047 सूर्य 08/09/2047 चंद्र 25/11/2047 मंगल 18/01/2048	गुरु 08/05/2048 शनि 16/09/2048 बुध 11/01/2049 केतु 28/02/2049 शुक्र 16/07/2049 सूर्य 27/08/2049 चंद्र 04/11/2049 मंगल 22/12/2049 राहु 25/04/2050	शनि 28/09/2050 बुध 14/02/2051 केतु 13/04/2051 शुक्र 23/09/2051 सूर्य 12/11/2051 चंद्र 01/02/2052 मंगल 30/03/2052 राहु 24/08/2052 गुरु 02/01/2053

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

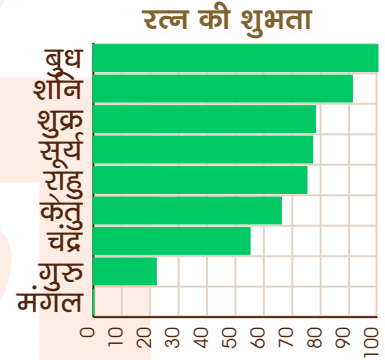
9835195382

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, धन
नीलम	शनि	91%	सुख, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	78%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
माणिक्य	सूर्य	77%	सन्तति सुख, सुख
गोमेद	राहु	75%	सुख, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	66%	व्यावसायिक उन्नति, सुख
मोती	चंद्र	55%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पुखराज	गुरु	22%	ग्रह कलेश, दुर्घटना, हानि
मूंगा	मंगल	0%	पराक्रम हानि, व्यय, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	03/01/1983	83%	61%	19%	98%	34%	78%	91%	62%	72%
राहु	02/01/2001	64%	34%	0%	100%	22%	84%	97%	88%	53%
गुरु	02/01/2017	83%	61%	6%	98%	47%	66%	91%	75%	66%
शनि	03/01/2036	64%	34%	0%	100%	22%	84%	100%	81%	53%
बुध	02/01/2053	83%	34%	0%	100%	22%	84%	91%	75%	66%
केतु	03/01/2060	64%	34%	6%	100%	22%	84%	78%	62%	78%
शुक्र	03/01/2080	64%	34%	0%	100%	22%	91%	97%	81%	72%
सूर्य	03/01/2086	89%	61%	6%	100%	34%	66%	78%	62%	53%
चंद्र	03/01/2096	83%	67%	0%	100%	22%	78%	91%	62%	53%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/1979-15/03/1980 27/07/1980-06/10/1982 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 -----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है अतः तृतीय भाव में मंगल की स्थिति शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्य कलापों को आप निर्भय होकर सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको समय समय पर इच्छित सफलता प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आवश्यक सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी तथा अपने परिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी इसके प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी। साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी परन्तु पित गर्मी अथवा रक्त विकार संबंधी किसी परेशानी से शारीरिक कष्ट हो सकता है। नवम भाव पर सप्तमस्थ दृष्टि से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म करने पर ही आप अधिक विश्वास करेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगे। लेकिन पिता के स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे सम्मानीय पुरुष होंगे तथा अन्य जनों से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा जिससे आप उत्साह पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्ण रूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। परिणामस्वरूप घर-द्वार जमीन-जायदाद, चल-अचल सम्बन्धी वस्तुओं पर थोड़ा बहुत कठिनाईयाँ आती हैं और उससे जातक को बेवजह चिन्ता कभी-कभी घेर लेती है तथा विद्या प्राप्ति में आंशिक रूप से तकलीफ उठानी पड़ती है।

माता से कोई न कोई किसी समय आंशिक रूप में तकलीफ मिलती है। सवारी एवं नौकरों से भी कोई न कोई परेशानियाँ उपस्थित होती रहती हैं। जिसमें थोड़ा बहुत नुकसान उठाने पड़ते हैं। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी तनावग्रस्त हो जाता है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक समय-समय मानसिक रूप से परेशान रहता है। कार्य के क्षेत्र में अनेक विघ्न आते हैं। पर वे सब विघ्न कालान्तर में स्वतः नष्ट हो जाते हैं। बहुत सारे कामों को एक साथ करने के कारण कोई भी काम प्रायः पूरा नहीं हो पाता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का आर्थिक संतुलन थोड़ा बहुत बिगड़ जाता है, जिस कारण आर्थिक संकट उपस्थित हो जाता है। लेकिन इतना सब कुछ हो जाने के बाद भी जातक के व्यवसाय, नौकरी तथा राजनीति के क्षेत्र में बहुत सफलताएँ प्राप्त होती हैं एवं सामाजिक पद प्रतिष्ठा भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान्, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप

सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भृत्कष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(02/01/2017 - 03/01/2036)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में यह 02/01/2017 को आरम्भ और 03/01/2036 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि चौथे भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है। यह विलम्ब और बाधक ग्रह के रूप में जाना जाता है, किन्तु अन्ततः फल देता है। यह फल की प्राप्ति के लिए जातक को कठिन परिश्रम के हेतु प्रेरित कर उसके धर्म की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि छटे, दसवें और प्रथम भाव पर है। चतुर्थ भाव, जिसमें यह स्थित है, जन्म स्थान, मनोरंजन, रोमान्स, धार्मिक प्रवृत्ति तथा आध्यात्मिक कार्य का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव अर्थात् 'सुखस्थान' को शक्ति प्रदान कर रहा है। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और कोई बीमारी नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

मातृ भूमि, मकान और माता के द्योतक चतुर्थ भाव में स्थित शनि के कारण आपको घर का सारा सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आप अपना नया मकान तथा नयी गाड़ी खरीद सकते हैं।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आपकी स्थिति अत्यंत सुदृढ़ होगी क्योंकि चौथे भाव में स्थित बली और योगकारक शनि की कार्य-व्यवसाय के दसवें भाव पर दृष्टि है। आप एक सरकारी सलाहकार अथवा मंत्री या उपदेशक हो सकते हैं। आप धनी, प्रतिष्ठित, सुखी और ऐन्द्रिय सुखों के प्रति आकर्षित होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा और आप उसका आनन्द लेंगे। आपको हर प्रकार से आनन्द मिलेगा। आपके बच्चे कम किन्तु आज्ञाकारी होंगे। धार्मिक प्रवृत्ति के होने के बावजूद आप इस दशा के दौरान पारिवारिक जीवन का आनन्द लेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा, ज्ञान तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए अत्यन्त अनुकूल है।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- शनि - शुक्र
(25/10/2023 - 25/12/2026)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 02/01/2017 को प्रारंभ होकर 03/01/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 25/10/2023 को प्रारंभ होकर 25/12/2026 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप रोमांटिक होंगे। आपके बहुत से मित्र होंगे, लोकप्रियता बढ़ेगी। आपकी बुद्धि तीव्र होगी, धनी बनेंगे। प्रगतिपथ में बाधाएं आएंगी मगर आप उन्हें पार कर लेंगे। सरकार से पुरस्कार मिल सकता है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - सूर्य
(25/12/2026 - 07/12/2027)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 02/01/2017 को प्रारंभ होकर 03/01/2036 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 25/12/2026 को प्रारंभ होकर 07/12/2027 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है।

पंचम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के 11वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर से दूर रह सकते हैं, अप्रसन्न हो सकते हैं। हृदय रोग से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। यह अंतर्दशा अधिक शुभ नहीं रहेगी। धर्म और अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- शहद और दूध का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- गरीबों को आटा, गुड़, तांबा दान करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- शनि - चन्द्र
(07/12/2027 - 07/07/2029)**

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 02/01/2017 को प्रारंभ होकर 03/01/2036 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांधों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। चंद्रमा मन और माता का कारक है।

इस अवधि में आप बाधाओं के बावजूद कार्यक्षेत्र में दक्षता और सफलता प्राप्त करेंगे। समान में लोकप्रिय होंगे; उच्चपद प्राप्त होगा। घरेलू जीवन भी सुखी रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- शनि - मंगल
(07/07/2029 - 16/08/2030)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 02/01/2017 को प्रारंभ होकर 03/01/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 07/07/2029 को प्रारंभ होकर 16/08/2030 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

मंगल ऊर्जा का कारक है। तृतीय भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 6, 9, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी, प्रसिद्ध और कार्यों में दक्ष होंगे। परिवार में अशांति हो सकती है क्योंकि आप अकखड़ और सिद्धांतहीन हो सकते हैं। प्रत्येक कार्य और उद्यम में बाधाएं आ सकती हैं।

भाई-बहनों, परिवारजनों से कटुवाणी के कारण संबंध बिगड़ सकते हैं। कान के रोगों से बचाव करें।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के वैदिक मंत्र के 10000 जाप करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- शनि - राहु
(16/08/2030 - 22/06/2033)**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 02/01/2017 को प्रारंभ होकर 03/01/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 16/08/2030 को प्रारंभ होकर 22/06/2033 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपको माता-पिता (संभवतः माता) के माध्यम से अचल संपत्ति आदि का लाभ हो सकता है। आप असंतुष्ट, अप्रसन्न और विचलित रह सकते हैं। मित्र कम होंगे, ईमानदारी में कमी हो सकती है। बुद्धिमत्ता कम हो सकती है, कोई धोखा दे सकता है। माता-पिता में से एक आप से अप्रसन्न होकर दूर रह सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382